सब जिमी मोहोल हक के, और सब ठौरों दीदार।
सब अलेखे अखंड, कहे महामत अर्स अपार।।५५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि परमधाम की शोभा बेशुमार है। यहां की सब जमीन और महल बेशुमार हैं तथा अखण्ड हैं सब जगह से श्री राजजी महाराज का दर्शन होता है।

।। प्रकरण ।। २६ ।। चौपाई ।। १२२१ ।।

पसु पंखियों की पातसाही

एह निमूना ख्वाब का, किया कारन उमत।
कायम अर्स ख्वाब में, देखाया लेने लज्जत।। १ ।।

परमधाम की ब्रह्मसृष्टियों के वास्ते यह नमूना स्वप्न का बनाया जिससे वह स्वप्न में बैठकर अखण्ड परमधाम की लज्जत ले सकें।

ब्रह्मसृष्ट कही वेद ने, अहेल-अल्ला कहे फुरमान।
निसबत सुख ख्वाब में, कर दई हक पेहेचान।। २ ।।

वेद में जिन्हें ब्रह्मसृष्टि कहा है, कुरान में उन्हें अल्लाह का वारिस कहा है। संसार के अन्दर श्री राजजी महाराज ने अपनी निसबत की पहचान करा दी है।

एक साहेबी अर्स की, और कोई काहूं नाहें।
आराम देने उमत को, देखाया ख्वाब के माहें।। ३ ।।

परमधाम की साहेबी के समान और कहीं कुछ है ही नहीं, इसलिए ब्रह्मसृष्टि को आराम देने के लिए स्वप्न में साहेबी दिखाई।

ख्वाब देखाई साहेबी, और अर्स की हैयात।
ए दोऊ तफावत देख के, अंग में सुख न समात।। ४ ।।

स्वप्न में एक तो परमधाम की साहेबी दिखाई और दूसरी अखण्डता दिखलाई। इन दोनों में (सत और झूठ में) फर्क देखकर अंगों में सुख नहीं समाता है।

अब कहूं अर्स अजीम की, और बन का विस्तार।
नहीं इंतहाए जिमी जंगल का, ना पसु पंखी सुमार।। ५ ।।

अब परमधाम के वनों का विस्तार बताती हूं। यहां जंगल जमीन बेशुमार हैं और पशु पक्षियों की भी कोई गिनती नहीं है।

इन रेत रंचक की रोसनी, आकास न मावे नूर।
तो रोसनी सब बन की, क्यों कर कहूं जहूर।। ६ ।।

यहां की रेत के एक कण का तेज आकाश में नहीं समाता तो पूरे वन की रोशनी का कैसे बयान करूं?

तेज ऐसो इन डारको, और पात को प्रकास।
सो रोसनी ऐसी देखत, मावत नहीं आकास।। ७ ।।

वनों की डाल और पत्ते का ऐसा प्रकाश है कि इनकी रोशनी आकाश में नहीं समाती।

Nijanand App

ए जुबां ना केहे सकत है, एक पात की रोसन।
तो इन डारकी क्यों कहूं, जो प्रफुलित सब बन।।८।।

यह जबान एक पत्ते की रोशनी का बयान नहीं कर सकती, तो खिले हुए वनों की डाल की शोभा कैसे कहूं?

डार पात सब नूर में, फल फूल बेलों जोत।
केहे केहे मुख कहा कहे, सब आकास में उद्दोत।।९।।

यहां की डालियां, पत्ते, फल, फूल, बेलें सब नूरमयी हैं। सुन्दर तेज चमकता है। इनके उस तेज का इस मुख से कैसे बयान करूं? यह आकाश में जगमगा रहा है।

बन गिरदवाए अर्स के, और एही गिरदवाए ताल।
एही गिरदवाए जोए के, जुबां कहा कहे खूबी जमाल।।१०।।

रंग महल के तथा हौज कौसर तालाब के और जमुनाजी के चारों तरफ वन आया है। जिसकी सुन्दरता यहां की जबान से कैसे कहूं?

कह्या ऐसा ही बन नूरका, रेत ऐसे ही रोसन।
तो नूर मोहोल की क्यों कहूं, जाको नामै नूर वतन।।११।।

इसी तरह का ही वन, रेत व रोशनी अक्षरधाम की है तो फिर अक्षरधाम जिसका नाम ही नूर का धाम है, की शोभा कैसे कहूं?

तो अर्स मोहोल की रोसनी, और अर्स मोहोल हौज जोए जे।
नूर मोहोल ना केहे सकों, तो क्या कहे जुबां नूर ए।।१२।।

परमधाम के महलों की, हौज कौसर तालाब की, जमुनाजी के महलों की रोशनी की शोभा कैसे बताएं जबकि अक्षरधाम के नूर का वर्णन नहीं कर सकते।

सिरदार सब बन में, पसु पंखी जात जेती।
खूबी बल हिकमत की, जुबां क्या कहेगी केती।।१३।।

सब वनों में पशु-पक्षियों की जितनी जातियां रहती हैं, उनकी सुन्दरता, ताकत तथा कला और सिरदारी की शोभा का वर्णन यहां की जबान कितना और क्या करेगी?

जिमी अर्स की देखियो, हिसाब न काहूं सुमार।
देख देख के देखिए, अनेक अलेखे अपार।।१४।।

परमधाम की जमीन को देखो। यह बेशुमार है और देखने योग्य है। इसकी खूबी अपार है।

तिन सब जिमी में बस्ती, कहूं पाइए नहीं वीरान।
पातसाही पसुअन की, और जानवरों की जान।।१५।।

परमधाम की सब जमीन पर बस्ती है कहीं जगह खाली (वीरान) नहीं है। यहां पर पशु और पक्षियों की बादशाही है।

Nijanand App

ए जो जिमी अर्स हक की, सो वीरान क्यों कर होए।
अबादान हमेसगी, आराम बिना नहीं कोए।। १६ ।।

यह परमधाम की जो जमीन और महल है, सब श्री राजजी महाराज के हैं। यह वीरान कैसे हो सकते हैं? यह हमेशा ही बड़े आराम में आबाद रहते हैं।

अखंड आराम सब में, चल विचल इत नाहें।
सब सुख हैं अर्स में, रहें याद हक के माहें।। १७ ।।

यहां सबको अखण्ड आराम है। घट-बढ़ (कमी-बेशी) कुछ नहीं है। परमधाम में सब सुख हैं। यहां सब केवल श्री राजजी की ही याद में रहते हैं।

अरस-परस हैं हक सों, आसिक हक के जोर।
आवें दीदार को दरिया लेहेर ज्यों,कई पदमों लाख करोर।। १८ ।।

यह पशु-पक्षी श्री राजजी महाराज के आशिक हैं और उनके ही अंग हैं। यह लाखों, करोड़ों, पद्मों की संख्या में समुद्र की लहर के समान झुण्ड के झुण्ड दर्शन करने आते हैं।

कई लेहेरें आवत हैं, जो नाहीं जिमी को पार।
पीछे आवें दरिया पसुअन के, तिन दरियाव नहीं सुमार।। १९ ।।

पशु और पक्षियों की कई टोलियां आती हैं। यहां की जमीन बेशुमार है। उनमें रहते हुए पशु भी सागर के समान बेशुमार हैं और दरिया में पूर (प्रवाह) की तरह आते हैं।

दौड़ इनों के मन की, क्यों कर कहूं छंछेक।
पोहोंचें सब कदमों तले, जित खावंद सबों का एक।। २० ।।

इनकी गति मन से भी तेज है इनकी फुर्ती तो कही नहीं जा सकती जहां सबके एक खावंद श्री राजजी महाराज बैठे होते हैं, सब उनके चरणों में पहुंच जाते हैं।

जो ठौर चित्त में चितवें, हम जाए पोहोंचें इत।
खिन एक बेर न होवहीं, जानों आगे खड़े हैं तित।। २१ ।।

जिस ठिकाने पर हमारे मन में जाने की इच्छा होती है, हम उसी ठिकाने पहुंच जाते हैं। चितवन में पहुंचने में एक क्षण की भी देरी नहीं होती, लगता है कि वहीं पहुंच गए।

एक हक अर्स के नजीक हैं, कोई दूर दूर से दूर।
आवत सब दीदार को, जानों आगे खड़े हजूर।। २२ ।।

कोई रंग महल के पास में और कोई दूर-दूर बसते हैं वह सभी दर्शन करने आते हैं, लगता है सबसे आगे यही खड़े हैं।

हिकमत बल इनों के, क्यों कर कहे जुबान।
दीदार पावें अर्स हक का, सो देखो दिल आन।। २३ ।।

इनकी कला और ताकत यहां की जबान से कैसे बताऊं? श्री राजजी महाराज का जब यह दर्शन करते हैं तो उस समय की खूबी दिल में विचार करके देखो।

Nijanand App

क्यों न होए बल इनको, जाको अमृत हक सींचत।
ए पाले-पोसे खावंद के, अर्स तले आवत।। २४ ।।

इनको हक अपनी अमृत भरी नजर से सींचते हैं तो ताकत होनी ही चाहिए। यह श्री राजजी महाराज के पाले-पोसे हैं, इसलिए चांदनी चौक में आते हैं।

विचार किए पाइयत हैं, इनों बल हिकमत।
ए किया निमूना पावने, इन कादर की कुदरत।। २५ ।।

विचार करने से ही इनकी कला और शक्ति का पता चलता है। इसे जानने के वास्ते ही अक्षर की कुदरत (योगमाया) ने संसार में दूसरे नमूने बनाए हैं।

हकें देखाई इन वास्ते, अपनी जो कुदरत।
अर्स बड़ाई पाइए, ए देखें तफावत।। २६ ।।

श्री राजजी महाराज ने इन्हीं के वास्ते ही अपनी माया दिखलाई। जिसे देखकर अखण्ड परमधाम की महिमा का फर्क जाना जाता है।

करत सबे साहेबियां, जिमी जुगत भरपूर।
दोऊ बखत आवत हैं, देखन हक का नूर।। २७ ।।

यह सब पशु-पक्षी परमधाम की जमीन पर राज्य करते हैं और दोनों समय प्रातः छः बजे एवं सायं तीन बजे चांदनी चौक में सवारी के समय आते हैं।

पातसाही पसु पंखियन की, करत बिना हिसाब।
अखंड अलेखे अति बड़े, पिएं नूर हैयाती आब।। २८ ।।

पशु-पक्षियों की बेहिसाब बादशाही है। वह अखण्ड है और बेशुमार है और अखण्ड परमधाम का नूरी जल नजरें करम पीकर तृप्त होते हैं।

हिसाब नहीं पसुअन को, हिसाब नहीं पंखियन।
नाहीं हिसाब बन जिमी को, जो बीच कायम वतन।। २९ ।।

पशु-पक्षी, वन और जमीन का अखण्ड परमधाम में कोई हिसाब नहीं है।

बसत सबे अर्स तले, कई पदमों लाख करोर।
करत पूरी पातसाहियां, पसु पंखी दोऊ जोर।। ३० ।।

पद्मों, करोड़ों की संख्या में यह पशु और पक्षी परमधाम में अपनी बादशाही में रहते हैं।

जो कोई दूर बसत हैं, सो जानों आगे हजूर।
बोहोत बल हिकमत, सब अंगों निज नूर।। ३१ ।।

जो दूर रहते हैं वह सबसे पहले हाजिर हैं। उनके सभी अंगों में श्री राजजी महाराज का नूर होने से बड़ी शक्ति और कला है।

जित मन में चितवें, तित पोहोंचें तिन बखत।
ऐसा बल रखें हक का, कायम जिमी में बसत।। ३२ ।।

यह जहां जाने का विचार मन में करते हैं, उसी समय वहां पहुंच जाते हैं। ऐसी शक्ति श्री राजजी महाराज की इनको प्राप्त है जो अखण्ड परमधाम के रहने वाले हैं।

Nijanand App

पसु पंखी इन बन में, जो जिमी बन सोभित।
और सोभा पर नकस की, क्यों कर करूं सिफत।। ३३ ।।

इन वन के पशु-पक्षियों की, जमीन की, वन की शोभा तथा इनके परों की नक्शकारी की सिफत कैसे करूं?

पसु सुन्दर अति सोहनें, मीठी बान बोलत।
इनों सिफत जुबां क्यों कहे, जो खावंद को रिझावत।। ३४ ।।

यहां के पशु सुन्दर हैं और मनमोहक हैं सुन्दर मीठी वाणी बोलकर श्री राजजी महाराज को रिझाते हैं। इनकी सिफत को कैसे बयान करूं?

कई भांतें कई खेलौने, कई खेल खुसाली करत।
कई विधों निरत नाच के, मासूक को हंसावत।। ३५ ।।

यहां कई तरीके के खिलौने हैं जो कई तरह के खेल करके खुश करते हैं तथा कई तरह के नाच करके अपने धनी को रिझाते हैं।

अनेक बानी मुख बोलहीं, अनेक अलापें गाए।
ऐसे बचन कई बोलहीं, किसी आवे न औरों जुबाएं।। ३६ ।।

बहुत से अपने मुख से सुन्दर राग अलापते हैं। इस प्रकार के राग अलापते हैं कि और कोई बोल ही नहीं सकता।

छोटे बड़े पसु पंखी, सब रिझावें साहेब।
लड़ें खेलें बोलें बानी, विद्या कई विध साधें सब।। ३७ ।।

छोटे-बड़े सभी पशु-पक्षी लड़कर, खेलकर, बोलकर, गाकर कई तरह की कलाओं से श्री राजजी को रिझाते हैं।

कई जुदी जुदी विद्या जानवर, कई चढ़ें ऊंचे कूदें फांदें।
टेढ़े आड़े सीधे उलटे, कई विध गत साधें।। ३८ ।।

जानवरों में अलग-अलग कलाएं हैं। कई नीचे से ऊपर चढ़ते हैं। कई कूदते हैं। कई छलांग लगाते हैं। कई आड़े-टेढ़े, सीधे-उलटे कई तरह की कला दिखाते हैं।

कई विध करें लड़ाइयां, कई विध नाचें मोर।
कई विध हंसावें धनी को, खेल करें अति जोर।। ३९ ।।

यह कई तरह से लड़ाई लड़ते हैं। मोर कई तरह से नाचकर अपने साहेब को हंसाते हैं और खेल का आनन्द लेते हैं।

निरमल नेत्र अति सुन्दर, परों पर चित्रामन।
मीठी बानी खूबी खेल की, कहां लो कहूं रोसन।। ४० ।।

इन पशु-पक्षियों के नेत्र अति निर्मल और सुन्दर हैं। उनके परों पर चित्रकारी है। मीठे स्वरों की वाणी बोलते हैं और बड़े सुखों के साथ खेलते हैं। उनका कहां तक बयान करूं?

Nijanand App

और गत पसुअन की, खेल बोल इनों और।
क्यों कहूं सिफत इनों की, जो बसत सबे इन ठौर।। ४१ ।।

पशुओं की चाल, खेल और बोली जो परमधाम के हैं अलग ही ढंग की है। जिसकी सिफत कैसे वर्णन हो?

कई लड़ के देखावहीं, कई उड़ देखावें कूद।
क्यों कहूं सिफत कायम की, इन जुबां जो नाबूद।। ४२ ।।

कई लड़कर, कई उड़कर, कई कूदकर अपनी कला दिखाते हैं। इस नाचीज जबान से कैसे उनकी शोभा बताऊं?

कई देत गुलाटियां, कई अनेक करें फैल हाल।
सौ सौ गत देखावहीं, ज्यों हक हादी रूहें होत खुसाल।। ४३ ।।

कई गुलाटियां खाते हैं। कई अलग सौ-सौ तरह की अपनी कला दिखाकर श्री राजश्यामाजी और रूहों को प्रसन्न करते हैं।

कई हंस गरुड़ केसरी, कई बाघ चीते घोड़े।
ए ऐसे कहे जानवर, उड़ आकास में दौड़ें।। ४४ ।।

हंस, गरुड़, केसरी (सिंह), बाघ, चीते और घोड़े ऐसी शक्ति रखते हैं कि आकाश में उड़ते हुए दिखाई देते हैं।

हाथी इत कई रंग के, अस्वारी के सिरदार।
कबूं कबूं राजस्यामाजी रूहें, बड़े बन करत विहार।। ४५ ।।

यहां कई रंगों के हाथी हैं जो सवारी के लिए सदा तैयार रहते हैं। कभी श्री राजश्यामाजी व रूहें इन पर भी सवारी कर बड़े वन में घूमते हैं।

कबूं कबूं राज रूहन सों, मनवेगी सुखपाल।
बड़े बन मोहोलन में, करत खेल खुसाल।। ४६ ।।

कभी-कभी श्री राजजी महाराज रूहों के साथ मनवेगी चाल से चलने वाले सुखपाल में चढ़कर बड़े वन के महलों में तरह-तरह के खेल की कलाओं का आनन्द लेते हैं।

इत और बिरिख कई बड़े, निपट बड़े हैं बन।
बन पर बन अति विस्तरे, कहां लग करूं रोसन।। ४७ ।।

यहां और भी कई तरह के बहुत बड़े वृक्ष हैं जिनसे वनों का विस्तार बढ़ता ही गया है। कहां तक उनका बयान करूं?

एक पेड़ लम्बी डारियां, तिन डारों पर पेड़ अपार।
पेड़ डारों कई भोम रची, जुबां कहा कहे ए विस्तार।। ४८ ।।

एक पेड़ की लम्बी डाली होती है और उस डाली की बेशुमार पेड़ और डालियां हो जाती हैं। फिर उन डालों पर कई भोम (मंजिलें) बन जाती हैं। जिसका विस्तार कहने से बाहर है?

Nijanand App

इन भोम भोम कई मंदिर, पेड़ डारी कई दिवाल।
छाया बनी पात फूल की, कई बन मंदिर इन हाल।। ४९ ।।

इन पेड़ों की भोमों में कई मन्दिर बन जाते हैं। कई डालियां दीवार का रूप धारण करती हैं। इनके पत्ते, फूलों की छाया बड़ी सुन्दर है। ऐसे वन और मन्दिर बेमिसाल हैं।

विस्तार बड़ा एक पेड़ पर, कहां लग कहूं जुबान।
देखो विध एक बिरिख की, ए मंदिर न होए बयान।। ५० ।।

एक पेड़ का जब इतना विस्तार है तो मन्दिर का बयान यहां की जबान से कैसे करें?

एक बिरिख को बरनन, ऐसे कई बिरिख तिन बन माहें।
तिन पर विस्तार अति बड़ो, सेहेर बसत जानों ताहें।। ५१ ।।

एक वृक्ष का जो वर्णन किया है ऐसे कई वृक्ष वनों में हैं जिनका बहुत बड़ा विस्तार है और ऐसे दिखाई देता है जैसे कोई शहर बसा हो।

एक पेड़ दरखत का, कई दरखत तिन पर।
तिन पर कई मंदिर रचे, कई रेहेत अंदर जानवर।। ५२ ।।

एक वृक्ष पर कई वृक्ष बन जाते हैं और उनके अन्दर कई मन्दिर बन जाते हैं। जिनके अन्दर कई जानवर रहते हैं।

किनके पेड़ जिमी पर, कई पेड़ पेड़ ऊपर।
यों पेड़ पर पेड़ आसमान लों, कई सोभा देत सुन्दर।। ५३ ।।

कुछ पेड़ जमीन पर होते हैं और कई पेड़ों के ऊपर पेड़ आसमान तक बनते जाते हैं, उनकी शोभा सुन्दर होती है।

इन विध बन विस्तार है, उपरा ऊपर अतंत।
सोभा अमान पसु पंखी, इन मंदिरों में बसत।। ५४ ।।

इस तरह से वन का ऊपरा ऊपर बहुत बड़ा विस्तार है और उनके मन्दिरों में बेशुमार पशु-पक्षी रहते हैं।

बोहोत दूर लों ए बन, आगूं आगूं बड़े देखाए।
चढ़ते चढ़ते चढ़ते, लग्या आसमानों जाए।। ५५ ।।

बहुत दूर तक यह वन आगे चला गया है और चढ़ते-चढ़ते आसमान तक लगा दिखाई देता है।

एक पंखी जिमी पर, एक बसत इन मोहोलन।
एक बसत बल परन के, आकास में आसन।। ५६ ।।

एक पक्षी जमीन पर रहता है, कुछ एक इन महलों में रहते हैं। कुछ एक ऐसे हैं जो अपने परों के बल पर ही सदा आकाश में ही उड़ते रहते हैं।

ए बड़े खेल की खुसाली, बड़े बन कबूं करत।
अस्वारी पसु पंखियन पर, कई कूदत उड़ावत।। ५७ ।।

यह खेल खुशी के हैं। बड़े-वन के बीच कभी-कभी श्री राजजी महाराज पधारते हैं और पशु-पक्षियों की सवारी कर उन्हें छलांग लगवाते हैं और उड़वाते हैं।

Nijanand App

हाथी ऊंचे पहाड़ से, मुख सुन्दर दंत सुढाल।
मन वेगी कबूं न काहिली, तेज तीखी चलें चाल।। ५८ ।।

यहां के हाथी बड़े ऊंचे पहाड़ के समान हैं तथा उनके मुख, दांत अति सुन्दर हैं, शोभनीय हैं। इनके अन्दर कभी सुस्ती नहीं है। यह मन के समान तेज चाल चलते हैं।

बाघ गूंजें अति बली, कूवत ले कूदत।
देखे आवत दूर से, जानों आसमान से उतरत।। ५९ ।।

यहां के बाघ अति बलवान हैं और जंगल में दहाड़ते हैं। अपनी ताकत से छलांग लगाते हैं। इनको दूर से छलांग लगाकर आते हुए देखकर ऐसा लगता है कि जैसे आसमान से उतर रहे हों।

चीते अतंत सुन्दर, ऐसे ही बलवान।
कमी काहू में नहीं, सोभित जोड़ समान।। ६० ।।

यहां के चीते भी ऐसे ही सुन्दर और बलवान हैं। सब एक समान दिखाई देते हैं। किसी में कोई कमी नहीं है।

जरे जानवर के वाओ सों, ब्रह्मांड उड़ावे कोट।
तो अर्स जिमी के फील की, कहूं सो किन पर चोट।। ६१ ।।

अर्श के छोटे से जानवर की हवा से करोड़ों ब्रह्माण्ड उड़ जाते हैं तो फिर परमधाम के हाथियों की किससे उपमा दें?

ब्रह्मांड बड़ा इन दुनी में, कोई नाहीं दूसरा ठौर।
तो अर्स बाघ के बल को, कहूं न निमूना और।। ६२ ।।

यह दुनियां में सबसे बड़ा ब्रह्माण्ड है और कोई दूसरी वस्तु नहीं है तो परमधाम के बाघ की ताकत का कहां से नमूना दें?

बोहोत बातें हैं इनकी, सो केती कहूं जुबान।
ए नेक इसारत करत हों, है बेसुमार बयान।। ६३ ।।

यहां की बड़ी-बड़ी बातें हैं। यहां की जबान से कहां तक कहूं? यह थोड़ी सी इशारतों में कही है, शोभा बेशुमार है।

अलेखे बल अकल, अलेखे हिकमत।
अलेखे पेहेचान है, इस्क अलेखे इत।। ६४ ।।

इनकी ताकत, बुद्धि, कला, पहचान और इश्क बेशुमार है।

ख्वाब बल पसुअन का, देखलाया तुम को।
कैसा बल अर्स पसुअन का, विचार देखो दिल मों।। ६५ ।।

सपने के पशुओं की ताकत तुमको दिखाई है। अब अपने दिल से विचार कर देखो कि परमधाम के पशुओं की ताकत कैसी होगी?

Nijanand App

झूठ देखे सांच पाइए, इस्क बल हिकमत।
ए तीनों तौल देखो दोऊ ठौर के, अन्दर अपने चित्त।। ६६ ।।

इश्क, ताकत और कला झूठ में देखकर सच्चे का अनुमान लगाओ। अपने चित्त में इन तीनों को (झूठे संसार के और परमधाम के) इश्क, कला और ताकत को तौलकर देखो।

ए झूठा अंग झूठी जिमी में, झूठी इन अकल।
पूछ देखो याही झूठ को, कोई अर्स की है मिसल।। ६७ ।।

यह हमारा यहां का तन और अक्ल सब झूठे हैं। इन सबको देखकर विचार करो कि यहां कोई अखण्ड परमधाम की तुलना योग्य है?

अर्स मिसाल कोई है नहीं, तौल देखो तुम इत।
ए झूठा पसु बल देख के, तौलो जिमी बल सत।। ६८ ।।

अखण्ड परमधाम का नमूना कोई है ही नहीं। यह तुम दिल में विचारकर देख लो। झूठे संसार के पशु की ताकत देखकर अखण्ड परमधाम के पशु की ताकत को विचार लो।

सांच झूठ पटंतरो, कबहूं नाहीं कित।
तो धनिएं देखाई कुदरत, लेने अर्स लज्जत।। ६९ ।।

सच और झूठ में यही फर्क है जिसे कभी किसी ने नहीं जाना, इसलिए हम अर्श की रूहों को लज्जत देने के लिए ही श्री राजजी महाराज ने ही माया दिखलाई है।

विचार किए इत पाइए, अर्स बुजरकी इत।
धनी बुजरकी पाइए, और बुजरकी उमत।। ७० ।।

यहां खेल में बैठकर विचार करने से ही अखण्ड परमधाम की महिमा मालूम होती है तथा श्री राजजी महाराज और सखियों की महिमा जानी जाती है।

महामत कहे ए मोमिनों, एही उमत पेहेचान।
बिध बिध बान जो बेधहीं, हक बका अर्स बान।। ७१ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! सखियों की यह पहचान है कि इनको परमधाम की वाणी तीर के समान लगती है।

।। प्रकरण ।। २७ ।। चौपाई ।। १२९२ ।।

पसु पंखियों का इस्क सनेह

खावंद इनों में खेलहीं, धंन धंन इनों के भाग।
अर्स के जानवरों का, कायम है सोहाग।। १ ।।

श्री राजजी महाराज इन पशु-पक्षियों के बीच खेलते हैं। यह बहुत भाग्यशाली हैं। परमधाम के जानवरों का अखण्ड सोहाग है।

सब जिमी में बसत हैं, करत हैं कलोल।
रात दिन जिकर हक की, करें मीठे मुख बोल।। २ ।।

यह पशु-पक्षी परमधाम में सब जगह बसते हैं और रात-दिन श्री राजजी महाराज में ही इनका चित्त रहता है। यह अपने मुख से मीठी बोली मैं पीऊ-पीऊ और तूही-तूही बोलते हैं।

Nijanand App